संपादक के नोट

मैं हमारे पुनर्जीवित प्रभु येशु मसीह के नाम में मेरे सब प्रिय लोगों का अभिवादन करती हूँ। प्रभु एक अनन्त प्रेम से हमें प्यार करता है। इसलिए उसके अनन्त प्यार से उसने तुम्हें और मुझे छुड़ाया है।

पिलातुस यहूदियों के सामने बरअब्बा एक कुख्यात कैदी और येशु को लाया, और उनसे पूछा कि वह उन दोनों में से किसे मुक्त करे।

मत्ती २७रू१७ – जब वे इकट्ठे हुए तो पिलातुस ने उनसे कहा, ष्तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दू? बरअब्बा को, या येशु को जो मसीह कहलाता है?

यहूदियों ने येशु को नहीं लेकिन बरअब्बा को मुक्त करने के लिए चुना।
वे अधिक जोर से चिल्ला उठे कि वे मसीह को क्रूस पर चढ़ाएँ। फिर उसने बरअब्बा को उनके लिए मुक्त किया और जब उसने येशु को कोड़े खिलाए, उसने उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दिया।
जब बरअब्बा कलवरी के क्रूस के पास खड़ा था और येशु को क्रूस पर देख रहा था, वह सोच रहा होगा कि अगर वहाँ येशु न होता तो वहाँ क्रूस पर मैं लटक रहा होता।

लेकिन जैसे भेड़ ऊन कतरनेवाले के सामने शान्त रहती है, वह मेरे कारण शान्त रहा और परमेश्वर के मेमने के समान मेरे पापों को ले लिया।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, मैं क्रूस के पास बरअब्बा के जगह में अपने आप को डाल देती हूँ। मैं खुद सोचती हूँ कि यह मेरे पापों के कारण, वह जो पाप नहीं जाना, पापी बना।

मुझे धर्मी बनाने के लिए वह अधर्मी बना।
वह मेरे अपराधों के कारण बेधा गया।
वह मेरे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया।
मेरी शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी।
मुझे चंगा करने के लिए उसने अपने बदन पर कोड़े खाए।

मुझे आनंतकालिक जीवन देने के लिए, उसने मेरे अधर्मों को अपने उपर ले लिया।
मुझे स्वर्गीय आशीषों को देने के लिए, उसने अपने आप को क्रूस पर दीन किया।
मुझे आनंतकालिक जीवन देने के लिए, वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा गया।
फिर भी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले। उसी ने उसको पीड़ित किया।

कौन मुझे मसीह के प्रेम से अलग करेगा?
क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
क्योंकि मुझे पूर्ण निश्चय है कि न मृत्यु न जीवन, न स्वर्गदूत न प्रधानताएं, न वर्तमान न भविष्य, न शक्तियां, न ऊँचाई न गहराई, और न कोई सृजी हुई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु येशु मसीह में है, अलग कर सकेगी।

परमेश्वर के प्रेम को गुलगुता के क्रूस पर देखा गया था। इसलिए उसे सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करने का निर्णय करो। परमेश्वर से आँसूओं से प्रार्थना करो कि मैं उससे और भी अधिक प्रेम करू जितना मैं आज करता हूँ।
उसकी भलाई कितना महान है और उसकी सुंदरता कितना महान है!

यह उत्तम है कि उसके प्रेम से भरे रहे और उसके प्रेम को याद करे।
इस संसार का प्रेम बदल सकता है और मनुष्य का प्यार घट सकता है।
लेकिन परमेश्वर का प्यार न बदलनेवाला प्यार है, वह घटता नहीं, लेकिन बढ़ता है।

पवित्र शास्त्र **यूहन्ना** १३ः१ में कहता है – **अब फसह के पर्व से पहिले, येशु ने यह जानकर कि मेरी घड़ी आ पहुँची है कि मैं जगत को छोड़ कर पिता के पास जाऊँ, तो अपनों से जो संसार में थे जैसा प्रेम करता आया था उन से अन्त तक वैसा ही प्रेम किया।**

प्रेरित पौलुस परमेश्वर के प्यार में गुम था। उसने परमेश्वर के प्यार के लिए खुद को संपूर्ण रीति से न्योछावर कर दिया।

एक बार जब पौलुस यरुशलेम की ओर जा रहा था उसने बहुत–से संकटों का सामना किया। जब दूसरे विश्वासियों को यह मालुम हुआ, उन्होने उसे आँसुओं से रोकने की कोशिश की। लेकिन पौलुस ने उन्हे यह कहकर दिलासा दिया कि, **प्रेरितों के काम २१ः१३ – तब पौलुस ने उत्तर दिया, तुम यह क्या कर रहे हो, कि रो–रोकर मेरा दिल तोड़ रहे हो? मैं तो प्रभु येशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बांधे जाने, परन्तु मरने के लिए भी तैयार हूँ।"**
इस लिए प्यारों, तुम्हारा पहला प्यार और संपूर्ण प्यार परमेश्वर पर रहे।

मरियम मगदलीनी ने परमेश्वर स संपूर्ण ह्रदय से प्यार किया। येशु के मृत्यु के बाद भी यह नहीं घटा। भोर होते ही वह उठी और वह दुख में रो रही थी। उसने सोचा येशु माली है।
यूहन्ना २०ः१५ – येशु ने उस से कहा, ष्हे नारी, तू क्यों रो रही है। तू किसे ढूँढ़ रही है?ष उसने उसे माली समझ कर उस से का, महोदय, यदि तू उसे कहीं उठा ले गया है तो मुझे बता कि तू ने उसे कहां रखा है, और मैं उसे ले जाऊंगी।"
मेरे प्यारों, क्या तुम में येशु के लिए ऐसा ही प्यार हैं?
न्यायियों ५ः३१ – कहता है – **हे यहोवा, इसी प्रकार तेरे सब शत्रु नाश हो जाएं! परन्तु वे जो परमेश्वर को प्यार करते हैं, उदय होते हुए तेजोमय सूर्य के समान हो।" फिर देश में चालीस वर्ष तक शांति रही।**
ताकि तुम तुम्हारे प्रभु परमेश्वर से प्यार करो, ताकि तुम उसके आवाज़ को मानो, और तुम उससे जकड़ जाओ, क्योंकि वह तुम्हारा जीवन और तुम्हारा लंबा आयु है।
इसलिए अति–प्यारों, परमेश्वर तुम्हे आशीष दें और तुम्हे अच्छे आरोग्य में रखे और परिपूर्ण शांति जो उसके नाम में है, रखे।

आप सब को ईस्टर कि हार्दिक शुभकामनाए।

–पास्टर सरोजा म.

परमेश्वर के वचन को जानो शैतान पर जय पाने के लिए।

यूहन्ना ३:८ – जो पाप करता है वह शैतान से हैं, क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इस अभिप्राय से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्य को नष्ट करे। दुष्ट हमारे जीवनों में हमेशा परिक्षाएँ लाता है। वह येशु मसीह के सामने आया और उसने कहा, ष्तुम्हे संकटों का क्रूस डोहने की क्या आवश्यकता है, तुम इतना दुखी क्यों हो? इस राज्य को देखों, अगर तुम केवल मेरे गुण गाओगें, मैं तुम्हे सबकुछ दूँगा।" दुष्ट हमेशा हमे आसान मार्गों को जीवन में लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। हम देखते हैं **मत्ती ४:९ – उसने कहा, ष्यदि तू गिरकर मुझे दण्डवत करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।"** दुष्ट हमे झूठ बोलने के लिए सिखाता है हमारे जीवनों के शुरूवात से ही। एक हाथ में, दुष्ट बात करता है ऐश्वर्य को देने की अगर हम परमेश्वर को छोड दें तो। दूसरी ओर वह हमे चेतावनी देता है उन कठिनाइयों का जो हम पर पड़ेंगे अगर हम परमेश्वर की आराधना करेंगे। जब हम दानिय्येल और उसके मित्रों शद्रक, मेशक और अबेद–नगो के जीवनों में देखते हैं उनपर ज़बरदस्ती की गई कि वें राजा नबूकदनेस्सर के सोने की मूर्ती की विक्र आराधना करें। क्योंके उन्होने ऐसा करने से मना किया, राजा ने आज्ञा दी कि भट्टी जितना गरम किया जाता था उससे सात गुणा ज़्यादा गरम किया जाए और इन चार लोगों को अग्नीमय भट्टी में डाला जाए। हम पढ़ते हैं **प्रकाशितवाक्य २:१० में – जो क्लेश तू सहने पर है उनसे न डर। देखो, शैतान तुम में से कितनों को बन्दीगृह में डालने पर है कि तुम परखे जाओं, और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना पड़ेगा। प्राण देने तक विश्वासी रह – तब मैं तुझे जीवन का मुकुट प्रदान करूंगा।** परमेश्वर हमसे क्या कहता है – इन वस्तुओं की चिंता नहीं करना, जो तुम्हे सताता हैं, ऐसा करेगा थोड़े दिनों के लिए, हो सकता हैं, दस या पंद्रह दिनों के लिए। लेकिन अगर तुम दुष्ट का सामना करोगे और अंत तक विश्वासी रहोगे, मैं तुम्हे जीवन का मुकुट दूँगा। दस आज्ञाओं में पहला आज्ञा क्या है? ष्तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। हम देखते हैं **निर्गमन २०:३–५** में – **"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिए कोई मूर्ति**

गढ़कर न बनाना, अथवा न किसी की प्रतिमा बनाना जो ऊपर आकाश में, या नीचे धरती पर या धरती के नीचे जल में है। न तो तू उन को दण्डवत करना और न ही उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ जो मुझ से बैर करते हैं उनकी सन्तान को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक बाप दादों की दुष्टता का दण्ड देता हूँ। राजा नबूकदनेस्सर दानिय्येल और उसके मित्रों शद्रक, मेशक और अबेद–नगो के लिए यह ज़रूरी ठहराता है कि उनके सामने बनाई गई मूर्ती के सामने वे झुकें। लेकिन उन्होंने राजा के आज्ञा का सामना किया और हम जानते हैं कि परमेश्वर ने उन्हे बहुतायत रीति से आशिषित किया। अगर हम बड़े ध्यान से येशु मसीह के जीवन के बारे में सोचेंगें, याद करें, शैतान उससे पर्वत पर दो बार मिलता है और उसे भरमाकर उसकी परीक्षा करता है। येशु शैतान को केवल वचन से ताड़ना देता है। लेकिन तीसरे बार जब शैतान आता हैं, वह कहता है मेरी आराधना करो।" यहाँ पर भी येशु शैतान को ताड़ना देता है और उसे दूर भगाता है और येशु कहता है तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत कर–और केवल उसी की सेवा कर।" हम पढ़ते हैं मत्ती ४:३–१० – और परखनेवाले ने निकट आकर उस से कहा, ष्यदि तू परमेश्वर का पुत्र हैं, तो आज्ञा दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।" पर उसने उत्तर दिया, ष्यह लिखा हैं, श्मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता हैं, जीवित रहेगाश्।" तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मनदिर के शिखर पर खड़ा करकें, उसने उस से कहा, ष्यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को नीचे गरा दे; क्योंकि लिखा हैं, श्वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों–हाथ उठा लेंगें, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पैरों में पत्थर से ठेस लगेश्।" येशु ने उस से कहा, यह भी लिखा हैः तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।" फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पर्वत पर ले गया, और संसार के सारे राज्य और वैभव को दिखाकर उसने कहा, ष्यदि तू गिरकर मुझे दण्डवत कर तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।" तब येशु ने उस से कहा, ष्हे शैतान, दूर हट, क्योंकि लिखा हैं, तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत कर – और केवल उसी की सेवा कर।" हम व्यवस्थाविवरण ६:१३ में भी देखते हैं – तुम केवल अपने परमेश्वर का भय मानना; तुम उसी की आराधना करना तथा उसी के नाम से शपथ

खाना। व्यवस्थाविवरण १०:२० – तुम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसी की सेवा करना तथा उस से लिपटे रहना, और उसी के नाम की शपथ खाना। एक बार शैतान जब येशु से दूर भागता हैं, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करते हैं। मत्ती ४:११ – तब शैतान उसे छोड़ कर चला गया, और देखों, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा–टहल करने लगे। याद रखें, दुष्ट का काम शुरू के समयों से ही हमे पाप करने को सिखाना हैं। लेकिन, अगर हम दुष्ट पर इस संसार में जय पाते हैं और वह हमसे दूर भागेगा, स्वर्गदूत, स्वर्ग में हमारे लिए आनंद मनाएंगे। स्वर्गदूत येशु की सेवा करने के बाद, तुरंत वह पवित्र आत्मा से भर गया, वहाँ से येशु उसके गलील के सेवा की ओर चला। येशु की चर्चा उस सारी जगह में फैली और आजू–बाजू में भी फैली। लूका ४:१४ में – तब येशु आत्मा की सामर्थ में गलील को लौटा और आस–पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई। येशु ने उसकी सेवा का आरंभ किया और वचन के ज़रिए टूटे दिलों को चंगा किया, बंधियों को छुड़ाया, लंगडों को चलाया और अंधों को नज़र दिया। बहुत–से प्राण उसके बचाने वाले अनुग्रह में लाए गए। जैसे येशु ने किया, याद रखे, हमे भी वचन का प्रयोग करना चाहिए, यह एक तलवार है शैतान से लड़ने के लिए और शैतान हमारी उपस्थिति से दूर भाग जाता है। परमेश्वर ने हमारे लिए उसका जीवन दिया है, हमे उसकी आराधना सच्चाई और आत्मा से करना चाहिए। शुरू के समयों से ही, दुष्ट की कई योजनाएँ थी इस्राएलियों को पराजित करने का। जब इस्राएली मिस्र के बंधन में थें, राजा फ़िरौन ने एक योजना बनाया कि वे बढ़े नहीं और वृद्धि न हो ताकि उनकी ताकत मज़बूत न हो। हम निर्गमन १:१६ – २२ में पढ़ते हैं – उसने कहा, ष्जब तम इब्रानी स्त्रियों की ज़च्चा के समय सहायता करो और उन्हें प्रसव के पत्थर पर बैठी देखों, तब यदि बेटा हो तो तुम उसे मार डालना, परन्तु यदि बेटी हो तो उसे जीवित छोड़ देना।" परन्तु वे दाइयां परमेश्वर का भय मानती थीं इस कारण मिस्र के राजा के आज्ञानुसार नहीं किया, परन्तु बेटों को भी जीवित छोड़ देती थीं। अतः मिस्र के राजा ने उन दाइयों को बुलवाकर उनसे पूछा, ष्तुमने ऐसा क्यों किया कि उन लड़कों को जीवित छोड़ दिया?ष दाइयों ने फ़िरौन से कहा, इब्रानी स्त्रीयां इतनी वृष्ट–पुष्ट हैं कि दाइयों के पहुंचने से पहले ही बच्चे को जन्म दे चुकती हैं।" अतः दाइयों के प्रति परमेश्वर दयालु थों, और वे लोग बढ़कर अत्याधिक सामर्थी हो गए। और इसलिए कि दाइयां परमेश्वर का भय मानती

थीं, उसने उनके भी घर बसा दिए। तब फ़िरौन ने अपनी समस्त प्रजा को यह कहकर आज्ञा दीं, उनके जितने बेटे उत्पन्न हों, तुम उन्हें नील नदी में फेंक देना, और सब बेटियों को जीवित छोड़ देना। इस्राएली लोग मिस्र में बंधन में ४३० वर्षों के लिए थे। फ़िरौन ने योजना की कि वें अधिक न होए और एक ताकतवर सेना न बने उन में ही। इसलिए फ़िरौन ने आज्ञा दिया कि सारे शिशू–लड़कों को मार ड़ाला जाए। यह पहला दुष्ट योजना है। लड़के का मतलब क्या है? हम देखते हैं **प्रकाशितवाक्य १२:५** में – **उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जो लोहे के दण्ड से सब जातियों पर शासन करेगा। उस स्त्री का वह बच्चा परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास उठा लिया गया।** लड़के का अर्थ है – वह जो विजय प्राप्त करता हैं, वह जो धर्मी हैं, वह जो परमेश्वर के लोगों को दुष्ट के पंजों से छुड़ा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं, दुष्ट ने यह सब शुरूवात से ही योजना बनाया था, राजा का राजाज्ञा की सारे नव– शिशू लड़कों को नील नदी में फैंका जाए यह भी दुष्ट कि योजना थी। दुष्ट लगातार परमेश्वर के बच्चों के खिलाफ़ योजना करता है १) उनकी झुंड़ नहीं बढ़नी चाहिए। २) वें शक्तिशाली नहीं बनने चाहिए। ३) उनके मध्य छुड़ाने वाला न हो। यह सब फ़िरौन की योजनाएँ थी। इस संसार का राजा, परमेश्वर के बच्चों को भिन्न–भिन्न प्रकार के बंधनों में ड़ालता है। वह ऐसे योजनाओं को बनाता है कि एक बार फँस जाएँ तो कोई भी उन्हे छुड़ा न पा सके। फ़िरौन इस्राएलियों के विरूद्ध योजना करता था ताकि वें बंधन में रहें, यह आज्ञा देकर कि सारे लड़कों को मार ड़ाला जाए। लेकिन, येशु मसीह के जन्म से यह सारी योजनाएँ असफ़ल हुई। अब हमारे पास श्येशुश्र में एक छुड़ाने वाला है। इसलिए, हम अभी जानते हैं कि फ़िरौन ने सारे शिशू–लड़कों को शुरू से ही मार ड़ालने की कोशिश क्यों की। जब येशु पैदा हुआ, राजा हेरोदेस ने भी कुछ ऐसा ही फ़िरौन जैसा योजना बनाया। उसने एक राजाज्ञा बनाया कि हर बच्चा जो दो साल का है और उससे कम आयु का हो उन्हे मार ड़ाला जाए। **मत्ती २:१६ – जब हेरोदेस ने देखा कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ चाल चली है तो वह आग बबूला हो गया। उसने आज्ञा देकर ज्योतिषियों से निश्चित किए हुए समय के अनुसार बैतलहम तथा उसके आस पास के सब स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष या इस से कम के थें, मरवा डाला।** लेकिन हमारा परमेश्वर एक महान परमेश्वर है। वह योजना करता है कि मूसा फ़िरौन के महल में ही बढ़ें, ताकि मूसा सुरक्षित रहे। सच्चमें परमेश्वर का प्यार इस्राएलियों पर बहुतायत

है। चाहे दुष्ट ने तैयारी की होगी इस्राएलियों को नाष करने की कई योजनाओं को, लेकिन यह हमारा परमेश्वर है जिसने मूसा को इस दुष्ट योजना से बचाया और उसे फ़िरौन के घर में ही बढाया। परमेश्वर मूसा से कहता है **निर्गमन ७:१** में – **तब यहोवा ने मूसा से कहा, देख, मैं तुझे फ़िरौन के लिए परमेश्वर–सा ठहराता हूँ और तेरा भाई हारून तेरा नबी होगा।** यह उन दुष्ट योजनाओं के कारण था जिन्हे फ़िरन ने बनाया और आज्ञा दिया कि हर लड़का–बालक को नील नदी में फैंका जाए। इसलिए परमेश्वर ने मृत्यु के दूत को भेजा ताकि मिस्रियों के सारे पहले बच्चों का नाष किया जाए, महल से लेकर बंधन के परिवारों तक। **निर्गमन १२:२९ – ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने सिंहासन पर विराजने वाले फ़िरौन के पहलौठे से लेकर बन्दीगृह में पड़े कैदी तक के पहलौठे तथा पशुओं के सब पहलौठों अर्थात मिस्र देश के सब पहलौठों को मार ड़ाला।** हमारा परमेश्वर हमसे बहुत प्यार करता हैं, यहाँ हम देखते हैं इन वचनों में, कितना प्यार करता है वह हमसे और दुष्ट से लड़ाई करता है। **गलातियों ६:७ – धोखा न खाओः परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।** परमेश्वर कहता है, दुष्ट के हाथों धोका नहीं खाओं, वह केवल हमे धोका देने के लिए आता है। यह ज़रूरी है कि हम सावधानी बरखे। याद रखना, शैतान येशु के सामने आया, वह केवल उसकी स्तुति करता रहा पहले, और फिर उसने येशु से कहा कि वह उसकी आराधना करे। हमे किसकी आराधना करना चाहिए? हमे केवल हमारे प्रभु परमेश्वर की आराधना करना चाहिए। हम सब पहला आज्ञा जानते हैं "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। यह भी याद रखें कि दानिय्येल और उसके मित्र शद्रक, मेशक और अबेद–नगो भी दंडित किए गए क्योंकि उन्होने उस सोने की मूर्ती जो राजा नबूकदनेस्सर की बनाई गई थी उसके सामने दंडवत नहीं की। भट्टी की गर्मी सात गुना और बढ़ाया गया और इन तीनों को अग्नीमय भट्टी में ड़ाला गया। मिस्र में, हमने देखा कि फ़िरौन इस्राएलियों को ताकत और बड़ी संख्या में बढ़ने नहीं देना चाहता था, इसलिए उसने आज्ञा दिया कि हर शिशु–लड़के को नील नदी में फैंका जाए। लेकिन हमारा परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर है; वह हमे चेतावनी देता है श्दुष्ट द्वारा धोका नहीं खानाश। जब हम विश्वास करते हैं और हमारे विश्वास और भरोसे को हमारे परमेश्वर पर करते हैं, वह हमें कभी नहीं मायूस करेगा और ना ही हमे धोका देगा। जब हमारा ध्यान परमेश्वर पर टिका रहता है और हम उसमे बंधे रहते हैं, वह हमे कभी ठट्टा में उड़ाए जाने को

नहीं देगा। चाहे हमे नाष करने के लिए दुष्ट कितना भी को कोशिश करें, परमेश्वर उसे लज्जित करेगा। फ़िरौन ने केवल आज्ञा दिया कि इस्राएली शिशु–लड़के नील में फैंके जाएँ, लेकिन हमारा परमेश्वर एक बदला लेने वाला परमेश्वर हैं, उसने मृत्यु के दूत को आज्ञा दिया कि पूरे मिस्र देश पर वह प्रकट हो जाए और सारे पहलोटों को महल से लेके गरीबों के घरों तक और वे जो बंधन में हैं, नाष करे। वही परमेश्वर कहता है **ज़कर्याह २:८** में – **क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है: विभव के बाद उसने मुझे सम्मानित करके उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटते हैं क्योंकि जो तुम्हें छूता है वह मेरी आँख की पुतली को छूता है।** हम उसके आँखों की पुतली हैं, जो कोई हमे छूता है वह उसके आँख की पुतली को छूता है। हमारे परमेश्वर की आँख हर एक पर हैं, उन इस्राएलियों पर भी जो मिस्र में थे। वह एक परमेश्वर है जिसने पूरे मिस्री सेना को लाल समुद्र में डुबा दिया, तो क्या वह हमारे शत्रुओं को नाष नहीं करेगा? **भजन संहिता १३६:१५ – परन्तु उसने फ़िरौन और उसकी सेना को लाल समुद्र में पटक दिया, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।** हमे हमेशा स्तुति और आराधना करना है हमारे परमेश्वर की, क्योंकि वह सच्चा और दयालु परमेश्वर है। जैसे परमेश्वर ने इस्राएलियों से प्रेम किया, वह आज भी हमसे प्रेम करता है; उसका प्रेम न बदलनेवाला और सच्चा है। यह ज़रूरी है कि हम हमारे देश के लिए प्रार्थना करें, हमे अच्छे अगुओं की ज़रूरत है हम पर राज करने के लिए और सही कानून को परमेश्वर के लोगों पर लाने के लिए। हमे शांति और एकता में इस देश में रहना हैं, इसलिए हमे अच्छे अगुओं के लिए प्रार्थना करते रहना हैं। **दानिय्येल ७:२७ – तब परमप्रधान के पवित्र लोगों को आकाश के नीचे अर्थात पृथ्वी के सब राज्यों की सत्ता, प्रभुता और महानता दी जाएगी। उसका राज्य सनातनकाल का राज्य होगा और सब राज्य उसकी सेवा करते हुए उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।** हम लगातार प्रार्थना करना चाहिए कि इस देश के शासक धर्मी हो और यह कि परमेश्वर का हाथ उनपर प्रभुता करे। पवित्र शास्त्र में, हम एक आदमी के बारे में पढ़ते है जिसका नाम नाबोत था, उसके पस एक बहुत ही फलवंत दाख की बारी थी यिज्रेल में राजा अहाब के महल के बगल में। राजा अहाब उसके दाख की बारी को पाना चाहता था और उसके बदले में उसे दूसरा देता जो उसके पास था, यह वह उस दाख की बारी को खरीद लेता। लेकिन नाबोत ने राजा के बिनती का नहीं ध्यान दिया, जिस कारण राजा अहाब क्रोधित हुआ क्योंकि इस इस्राएली ने उसे भूमि देने

से इनकार किया जो वह पाना चाहता था। वह भी दुखी और इस सारे हादसे से चिंतित था। जब उसकी पत्नी ने यह ध्यान दिया, उसने उसके पती से पूछा कि "तुम दुखी क्यों हो?" राजा अहाब ने उसकी पत्नी से वह बात की जो उसने उस इस्राएली नाबोत से की। क्योंकि उसकी दाख की बारी मुझे देने से इनकार किया, मैं दुखी हूँ। अब ईज़ेबेल राजा को एक दुष्ट योजना बताती है। १ राजा २१:१–१० – और इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ कि नाबोत नाम एक यिज्रेली की दाख की बारी यिज्रेल में सामरिया के राजा अहाब के राजभवन के बगल में थी। और आहाब ने नाबोत से कहा, अपनी दाख की बारी मुझे दे दे कि मैं उसमें साग–पात की वाटिका लगाऊं, क्योंकि यह मेरे घर के पास है और उसके बदले मैं उस से अच्छी वाटिका तुझे दूंगा और यदि तू चाहे तो मैं तुझे उसका मूल्य नगद चुका दूंगा। परन्तु नाबोत ने आहाब से कहा, "यहोवा न करे कि मैं अपने पूर्वजों कि सम्पत्ति तुझे दूं।" अतः आहाब उदास और क्रोधित होकर अपने घर आया, क्योंकि यिज्रेली नाबोत ने उस से यह कहा था, "मैं तुझे अपने पूर्वजों की सम्पत्ति नहीं दूंगा। और वह अपने बिछौने पर लेट गया और मुंह फेर लिया, और कुछ भी न खाया। परन्तु उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उसके पास आकर कहा, "क्या बात है कि तेरा मन ऐसा उदास है और तू भोजन नहीं कर रहा है?" तब उसने उस से कहा, "क्योंकि मैंने नाबोत यिज्रेली से बात की और कहा, 'नगद दाम लेकर मुझे अपनी दाख की बारी दे दे; और यदि तू चाहे तो मैं तुझे उसके बदले दूसरी दाख की बारी दे दूंगा।' परन्तु उसने कहा, मैं अपनी दाख कि बारी तुझे न दूंगा'। और उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उस से कहा, क्या तू इस्रएल पर राज्य करता है? उठ, भोजन कर, और तेरा हृदय आननदित हो। मैं तुझे यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी दूंगी। तब उसने आहाब के नाम से पत्र लिखे और उसकी मोहर उन पर लगा दी और पत्रों को उन पुरनियों और रईसों के पास भेज दिया जो नाबोत के साथ उसके नगर में रहते थे। उन पत्रों में उसने यह लिखा था, "उपवास की घोषणा करना और नाबोत को लोगों के सामने ऊंचे स्थान पर बैठाना; और उसके सामने दो ओछे लोगों को बैठाना जो उसके विरूद्ध साक्षी देकर कहें, 'तू ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की। तब उसे बाहर ले जाकर पथराव करके मार डालना। इसलिए हमे हमेशा सतर्क रहना हैं "जागते रहना और प्रार्थना करते रहना हैं" क्योंकि दुष्ट कभी नही सोता, लेकिन वह लगातार परमेश्वर के बच्चों के विरूद्ध योजना करता हैं, जैसे ईज़ेबेल ने किया। शुरूवात से हमने शत्रु के कार्यों को

इस्राएलियों पर देखा हैं। अंत का समय जल्द आ रहा है और हम दुष्ट के कार्य को इस पृथ्वी पर बढ़ते हुए देख सकते हैं। एलिय्याह एक महान नबी था; परमेश्वर ने उसके प्रार्थना को सुना और स्वर्ग से आग को भेजा। एक बार ईज़ेबेल ने भी एलिय्याह को भी धमकी दिया। **१ राजा १९:१–२ – तब आहाब ने ईज़ेबेल को वह सब बताया जो एलिय्याह ने किया था, कि उसने सब नबियों को तलवार से कैसे मार डाला। तब ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत को यह कहने के लिए भेजा, ष्यदि मैं कल इसी समय तक तेरा प्राण उन्हीं के समान न कर डालूं तो देवता मेरे साथ वैसा ही वरन उस से भी अधिक करें।"** वह एक नबी था जिसने एक बार बाल के नबियों को नाश किया। अब ईज़ेबेल ने एलिय्याह को धमकी दी। एलिय्याह ईज़ेबेल के चुनौती से डरता था। **१ राजा १९:४ – और स्वयं जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठ गया। वहां उसने यह कहकर अपनी मृत्यु के लिए प्रार्थना की, ष्हे यहोवा, अब बहुत हो चुका। मेरा प्राण ले लें, क्योंकि मैं अपने पूर्वजों से अच्छा नहीं हूं।** परमेश्वर एलिय्याह को एक उपाय देता है, वह एक परमेश्वर है जो किसी को ज़बरदस्ती नहीं करता उनकी इच्छा विरूद्ध जाने के लिए, चाहे वह एक महान याजक या एक नबी हो। ईज़ेबेल एक दुष्ट आत्मा है, यह आत्मा परमेश्वर के लोगों में भय ड़ालता है और उन्हे धमकी देता है। **१ राजा १९:१६ –१७ – और इस्राएल का राजा होने के लिए निमशी के पोते येहू का अभिषेक करना; और आबेल–महोला के शापात के पुत्र एलीशा का अपने स्थान पर नबी होने के लिए अभिषेक करना। और ऐसा होगा कि जो हजाएल की तलवार से बच जाएगा उसे येहू मार डालेगा, और जो येहू की तलवार से बच जाएगा उसे एलीशा मार डालेगा।** एलिय्याह के दुख को देख के, हमारा अच्छा परमेश्वर येहू को तैयार करता है कि वह इस्राएल का राजा अभिषेकित हो ताकि वह ईज़ेबेल से लड़े और एलीशा को एलिय्याह के जगह नबी बनाता है। हम आगे देखते हैं कि यह दोनो ईज़ेबेल के विरूद्ध सफ़लता से लड़ाई करते हैं। आज भीं, ईज़ेबेल की आत्मा परमेश्वर के बच्चों के विरूद्ध हमेशा आएगा, परमेश्वर का प्यार, और परमेश्वर के अभिषेकित के विरूद्ध भी, और लगातार उनके विरूद्ध लड़ते रहेगा। जब परमेश्वर हमारे साथ हैं, हमे इस दुष्ट आत्मा पर विजय मिल सकता है। याद रखें, अगर हम ईज़ेबेल के आत्मा के विरूद्ध विजय नहीं पाएँगें, तो हम गिर जएँगे। हमारे परमेश्वर ने हमे भय का आत्मा नहीं दिया

है। २ तीमुथियुस १:७ कहता है – **परमेश्वर ने हमें भीरूता का नहीं, परन्तु सामर्थ, प्रेम और संयम का आत्मा दिया है।** परमेश्वर ने हमे सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा क्यों दिया है? – ईज़ेबेल के दुष्ट आत्मा से लड़ने लिए। हमे याद रखना हैं, दुष्ट हमे आदि से पाप में ड़लने की कोशिश करते हैं, जैसे कि हमने पढ़ा हैं **१ यूहन्ना ३:८** में। आज भी वह वही कर रहा है। इसलिए, अपने–आप को इन सब दुष्ट कार्यों से बचाने के लिए, परमेश्वर ने हमे भय का आत्मा नहीं दिया है लेकिन सामर्थ, प्यार और संयम की आत्मा दी है। हम पवित्र–शास्त्र में पढ़ते हैं कि कैसे आदि से ही दुष्ट ने बहुत तरीकों से कार्य किए हैं ताकि परमेश्वर के लोग गिर जाएँ, बहुत से महायाजक, नबी और धर्मी मनुष्य गिर चुके हैं इन योजनाओं के कारण और दुष्ट के कार्यों के कारण। परमेश्वर में आने से पहले हमे कुछ नहीं मालूम था। लेकिन जब हम परमेश्वर के संग एक नज़दीकी और गहरा संगत और रिश्ता रखते हैं, वह वचन के सच्चाई का खुलासा करता है और हमे सिखाता है और हमे मज़बूत करता है। कलपना करें, अगर परमेश्वर ने हमारे साथ यह खुलासा किया हो आदि से जब हमने हमारा सफ़र परमेश्वर के साथ शुरू किया, क्या हमने उसका पीछा किया होता? कभी नहीं! पुनतियुस पिलातुस के जैसे हम हमारे हाथों को बहुत पहले धो देते। लेकिन अब हमारे हाथ हल पर हैं, यहा से पीछे मुड़ना नहीं है। एस्तेर के किताब में, हम देखते हैं कि हामान ने कैसे राजा क्षयर्ष को भड़काया कि वह इस्राएलियों के विरूद्ध कानून बनाए,

एस्तेर ३:८–११ – तब हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा, ष्तेरे राज्य के समस्त प्रान्तों में एक जाति के लोग सब जातियों के मध्य यहां वहां फैले हुए हैं। उनके नियम अन्य सब जातियों से भिन्न हैं, और वे राजा के कानून का पालन नहीं करतें, इसलिए उनका यहां रहना राजा के हित में नहीं है। यदि राजा को यह उचित जान पड़े तो उनको नाश करने की एक राजाज्ञा निकाली जाए, और मैं इस कार्य के करने वालों को दस हज़ार किक्कार चांदी दूंगा कि वे उसे राजा के खजाने में जमा करें।" तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी उतार कर अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहूदियों का बैरी था, दे दी। और राजा ने हामान से कहा, यह चांदी और वे लोग भी तुझे दिए जाते हैं, तु उनके साथ जो उचित समझे वही कर।" यहाँ हम दूसरी योजना को देखते हैं जिसे दुष्ट ने परमेश्वर के बच्चों के विरूद बनाया। याद रखें, येशु **यूहन्ना १६:३३** में क्या कहता है – **ये बातें मैंने तुमसे**

कही हैं, कि तुम मुझमें शांति पाओ। संसार में तुम्हें क्लेश होता हैं, परन्तु साहस रखो – मैंने संसार को जीत लिया है।" हम दुष्ट से लगातार सताए जाएंगें, लेकिन येशु हमे प्रोत्साहित करता है और कहता है **"साहस रखो, क्योंकि मैंने संसार पर जय पाया है।"** **यूहन्ना १७:१६ – वे संसार के नहीं हैं, जैसे कि मैं भी संसार का नहीं हूँ।** येशु कहता है "जो मेरे बच्चें हैं, वें इस संसार के नहीं हैं।" इसलिए, इस संसार का राजा हमेशा देखते रहेगा कि कैसे परमेश्वर के बच्चों को लज्जित किया जाए, कैसे वें गिरेंगे। दुष्ट हमारे विरूद्ध लगातार लड़ते रहेगा। हम येशु के हैं और हमारा घर "महिमा भरा देश" में हैं। **एस्तेर ४:१,३ – जब मोर्दकै को इन सब कार्यवाहियों का पता चला तब उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले और टाट ओढ़कर अपने ऊपर राख डालीं, और नगर के मध्य जाकर जोर जोर से रोने–चिल्लाने लगा। और प्रत्येक प्रान्त में जहां कहीं राजाज्ञा पहुंची वहां यहूदियों के मध्य बड़ा विलाप हुआ, और वे उपवास करने तथा रोने–पीटने लगें, और कई तो टाट ओढ़कर राख पर पड़े रहे। एस्तेर ४:१६ – "तू जाकर शूशन के समस्त यहूदियों को एकत्रित कर और तुम सब मेरे लिए उपवास करो। तीन दिन और तीन रात नतो कुछ खाओ और न पियो, और मैं भी अपनी सहेलियों सहित ऐसा ही उपवास करूंगी। इस प्रकार मैं राजा के पास जाऊंगी, यद्यापि यह नियम के विरूद्ध है। और यदि मैं नाश हो गई तो हो गई।"**

यहा हम देखते हैं कि जब सारे लोग एकत्रित हुए, उन्होने परस्थिति का सामना सफ़लता से किया, पवित्र शास्त्र में दर्ज है कि पूरा दुष्ट योजना बदल गया। **एस्तेर ९:१ – बारहवें महीने अर्थात अदार माह के तेहरवें दिन, जब राजाज्ञा और नियम कार्यानवित किए जानेवाले थे और जब यहूदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे तभी उनकी आशा के विपरीत, यहूदी उन पर प्रबल हो गए।** उसी दिन, तारीख़ और समय शत्रु का सारा योजना बना था, लेकिन हमारे अच्छे परमेश्वर ने पूरी परिस्थिति को इस्राएलियों के लिए बदल दिया। यह कैसे हुआ? यह केवल उपवास और प्रार्थना से हुआ, लोग एकता सें,बुद्धि और ज्ञान से कार्य करने लगे दुष्ट की हर योजना को हराने के लिए। **मत्ती २६:५२ – तब येशु ने उस से कहा, ‶अपनी तलवार म्यान में रखें, क्योंकि जो तलवार उठाते हैं वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।** इस संदेश में हमने देखा हैं कि कैसे दुष्ट लगातार दुष्ट योजनाएँ

बनाता हैं परमेश्वर के बच्चों के विरूद्ध। फ़िरौन, राजा हेरोदेस, राजा नबूकदनेस्सर, इन सारे लोगों ने अलग–अलग तरीकों से इस्राएलियों को नाष करने के लिए योजना को जो उसके बच्चों के विरूद्ध था, हराया और उन्हे विजय दिया अंत तक। आज भी, येशु कहता है "तुम मेरे आँखों की पुतलीं हो, हर एक तलवार जो तुम्हारे विरूद्ध उठता हैं, उसी तलवार से वह दुष्ट नाष होगा।" परमेश्वर हमे विजय देगा हमारे सारे कार्यों में। **मत्ती २१:४४ – जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चूर–चूर हो जाएगा, परन्तु जिस किसी पर यह गिरेगा, उसे पीस कर धूल बना डालेगा।** हमे और ज़्यादा क्या चाहिए? वही परमेश्वर जिसने मिस्र सेना को लाल समुद्र में डुबा दिया, हमे सामर्थ, प्यार और संयम का आत्मा दिया है। हमे ईज़ेबेल के आत्मा से आज क्यों ड़रना है? यह ज़रूरी है जानना कि आदि से दुष्ट हमेशा परमेश्वर के शूर वीर मनुष्यों को गिराना चाहता था, उन्हे दुख–दर्द से पीड़ा पहुंचाकर उन्हें नाष करने के लिए। यह वही दुष्ट है जो येशु के सामने इस पृथ्वी पर खड़ा हुआ और उसकी परीक्षा कीं, क्या येशु हमे अकेला छोड़ेगा? कभी नहीं! इसलिए हमे कभी अकेला नहीं होना चाहिए; हमे हमेशा परमेश्वर के आत्मा के साथ बंधे रहना चाहिए ताकि हम विजय पा सके। नबी एलिय्याह कुछ समय के लिए दुखी था, वह थक चुका था और परेशान हो चुका था, लेकिन हमारे अच्छे परमेश्वर ने उसे आराम करने दिया और येहू को राजा बनाया और एलिशा को नबी बनाया ईज़ेबेल के विरूद्ध सफ़लता से लड़ने के लिए। हमारा परमेश्वर जानता है कि जब हम थके हुए है और दुखी हैं, वह हम पर दया करता है और आश्वासन देता है कि हमे सामना करना हैं उनका जो हम पर तलवार उठाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि वें उस तलवार से मरेंगे।" इस विश्वास के साथ जो परमेश्वर में हैं, हमे शत्रु का सामना करना है। एक और बार हम पढ़ते हैं पवित्र शास्त्र में **गलातियों ६:७ – धोखा न खाओः परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।** हमे कभी मायूस नहीं होना है दुष्ट के योजनाओं से; वह परमेश्वर जिसने इस्राएलियों को बचाया है उनके जीवनों के हर कठिन परिस्थितियों सें, आज हमारे साथ है। हम पढ़ते है **इब्रानियों ११** बार–बार और धैर्य के आत्मा को हमारे भीतर पाते हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ कि यह संदेश बहुतों के जीवन में आशीष लाएं।

– पास्टर सरोजा म.